③ [ ] + [ 4 ] = [ 4 ]

योग पूर्व पृष्ठ    पृष्ठ 3 के अंक    कुल अंक

30 (1) पूर्ण प्रतियोगिता - पूर्ण प्रतियोगिता से तात्पर्य बाजार की ऐसी स्थिति से है जिसमे अनेक क्रेता विक्रेता हो उनके मध्य स्वतंत्रापूर्वक प्रतियोगिता होती है तथा वस्तु की ईकाइयाँ रुप, किस्म, रंग, गुण मे समान हो।

परिभाषा -

बोल्डिंग के शब्दो मे "पूर्ण प्रतियोगिता उस स्थिति मे होती है जिसमे अनेक क्रेता तथा विक्रेता हों वे एक ही प्रकार की वस्तु का क्रय विक्रय करते हो बाजार मे वस्तुओ का मूल्य एक ही हो तथा वे स्वतंत्रापूर्वक परस्पर क्रय विक्रय करते हों।"

30 (2) लगान - साधारण शब्दो मे लगान से तात्पर्य उस भुगतान से है जो किसी भौतिक वस्तु के प्रयोग के बदले निर्दिष्ट काल मे उस भौतिक वस्तु के स्वामी को मिलता हो इसके लिए अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जैसे - मकान, खान, दुकान, भूमि आदि के प्रयोग के लिए इनके स्वामियो को मिलने वाला भुगतान लगान कहलाता है।

परिभाषा –
रिकार्डो के अनुसार– "लगान भूमि की उपज का वह भाग है जो भू-पति को भूमि की मौलिक और अविनाशी शक्तियों के प्रयोग के बदले दिया जाता है।"

30(3) अनवरत योजना – जनता सरकार ने पाँचवी पंचवर्षीय योजना को उसकी अवधि से पूर्व अर्थात चार वर्षों मे ही (1974-1978) समाप्त करके 1 अप्रेल 1978 से एक नयी योजना प्रारंभ कर दी जिसे अनवरत योजना का नाम दिया गया।

BSEMP

2

पृष्ठ के अंकों का योग

(5) | 6 | + | 4 | = | 10 |

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 5 के अंक — कुल अंक

मध्यप्रदेश

30 (4) कर के लक्षण या विशेषताएँ —

(1) कर एक अनिवार्य अंशदान है — कर का भुगतान करना अनिवार्य होता है इसको भुगतान किसी व्यक्ति या अधिकारी की इच्छा पर निर्भर नही करता है

(2) कर व्यक्तियों द्वारा देय होता है — कर यद्यपि वस्तुओं एवं व्यक्तियों दोनो पर लगाया जाता है किन्तु यह केवल व्यक्तियों द्वारा ही देय होता है।

(3) कर का उपयोग सार्वजनिक हित के लिए किया जाता है।

30(5) आर्थिक स्थिरता योजनाबद्ध विकास द्वारा ही संभव है योजना के अभाव मे तेजी या मन्दी की स्थिति मे वस्तुओं की कमी, रोजगार के अवसरो की कमी आदि से देश का संतुलन बिगड़ता है। यदि योजनाबद्ध विकास द्वारा अर्थव्यवस्था का संचालन हो तो देश मे आर्थिक स्थिरता आ सकती है।

B S E M P

4

पृष्ठ के अंकों का योग

10 + 2 = 12

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

30 (6) आर्थिक नियोजन के द्वारा श्रमिको व पिछड़े, गरीब व असहाय लोगो की सामाजिक सुरक्षा भी की जाती है जिससे श्रमिक मन लगाकर अधिक से अधिक काम करें तथा देश के राष्ट्रीय उत्पादन मे वृद्धि हो। सामाजिक सुरक्षा के माध्यम है – चिकित्सा व्यवस्था, बीमा योजना, बेरोजगारी भत्ता, वृद्ध आश्रम आश्रितो को लाभ, मातृत्व लाभ, दुर्घटना लाभ आदि। इस प्रकार आर्थिक नियोजन द्वारा सामाजिक सुरक्षा संभव है।

BSEMP

2

पृष्ठ के अंको का योग

| 12 | + | 4 | = | 16 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 7 के अंक | | कुल अंक |

मध्यप्रदेश

30 (7) गैट- गैट अर्थात (जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ एंड ट्रेड) तटकर और व्यापार संबंधी सामान्य समझौता, एक बहुपक्षीय संधि जिसमें बहु-पक्षीय व्यापार से संबंधित सर्वसम्मत नियम निर्धारित किए गए है। 15 अप्रैल 1994 के दिन यह समझौता 125 देशो के मध्य हुआ जिसमे भारत भी सम्मिलित है इस समझौते का नया नाम विश्व व्यापार संगठन है।

30(8) खाद्यान्न फसले - खाद्यान्न फसलो से आशय उन फसलों से है कि जो भोजन के मुख्य पदार्थों का कार्य करती है एवं भोजन मे प्रयुक्त होती है उदाहरण - गेंहू, चावल, मक्का आदि। इन्हे खाद्य फसले कहते हैं।

30(9) तालाबों द्वारा सिंचाई के प्रमुख लाभ निम्न है—

(1) पठारी भाग के लिए उपयोग – तालाब मुख्यत: पठारी भागो के लिए उपयोगी होते हैं क्योंकि इन भागों मे कुएँ खोदना कठिन होता है।

(2) बेकार जल का सदुपयोग – तालाबों द्वारा वर्षा से बेकार हुए जल का सदुपयोग किया जा सकता है तालाब के पानी का उपयोग सिचांई के अलावा नहाने धोने आदि कार्यों मे भी किया जा सकता है।

B S E M P

2

पृष्ठ के अंकों का योग

9

| 16 | + | 6 | = | 22 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 9 के अंक | | कुल अंक |

30 (10) पूंजीगत उद्योग - पूंजीगत उद्योग से आशय उन उद्योगो से है जो आधारभूत तथा अन्य उद्योगो के लिए पूंजी तथा साधनो की व्यवस्था करते हैं उन्हे पूंजीगत उद्योग कहते हैं पूंजीगत उद्योग राष्ट्र की आर्थिक उन्नति का सूचक होते हैं " एक बड़े आकार की औद्योगिक ईकाई को जिससे उत्पत्ति के विभिन्न साधनो को संयोजित कर अन्य उद्योगो के प्रयोग हेतु रखा जाए उसे पूंजीगत उद्योग कहते हैं।"

B
S
E
M
P

30 (11) बाजार मूल्य की विशेषताएँ निम्न है -

(1) अल्पकालीन मूल्य - बाजार मूल्य एक अल्पकालीन मूल्य होता है जिस पर अल्पकाल में माँग और पूर्ति का संतुलन होता है।

4
पृष्ठ के अंकों का योग

(2) वास्तविक रुप से प्रचलित - बाजार मूल्य बाजार मे वास्तविक रुप से प्रचलित होता है। यह किसी

समय विशेष पर बाजार मे यथार्थ रुप से प्रचलित होता है।

(3) माँग का प्रभाव – बाजार मूल्य के निर्धारण मे पूर्ति की अपेक्षा वस्तु की माँग का अधिक प्रभाव पड़ता है क्योकि समय कम होने के कारण माँग के अनुरुप पूर्ति करना संभव नही होता।

BSEMP

30 (12) मिश्रित बाजार – जिस बाजार मे विभिन्न प्रकार की वस्तुओ का क्रय विक्रय किया जाता है उसे मिश्रित बाजार कहते हैं ऐसे बाजार प्रायः देहातो या छोटे छोटे नगरो मे पाए जाते हैं

पृष्ठ के अंकों का योग

इस प्रकार के बाजारो का प्रमुख लाभ यह कि इन बाजारो मे उपभोक्ता को अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएं एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाती हैं उसे इनके लिए अलग - अलग स्थानों में नही जाना पड़ता है उदा० - गाँवो मे लगने वाली हाट

BSEMP

30 (13) वितरण का कार्य साहसी उद्योग पति या मालिक करता हैं प्रत्येक साधनो को उत्पादित धन का वितरण किया जाना चाहिए वितरण निम्न साधनो को किया जाए-

(1) भूमिपति को लगान।
(2) श्रमिक को मजदूरी।
(3) पूंजीपति को ब्याज।
(4) संगठनकर्ता को वेतन।

इन साधनो का भुगतान करने के बाद

6
पृष्ठ के अंकों का योग

जो कुछ भी साहसी के पास शेष रहता है उसे ही लाभ कहते है अर्थात साहसी को लाभ के रूप मे सबसे अंत मे हिस्सा मिलता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्पादन के साधनो को ही वितरण किया जाना चाहिए।

30 (ii) दोहरे संयोग का अभाव- दोहरे संयोग से आशय है कि दो ऐसे व्यक्तियों का मिलना जो अपनी - अपनी वस्तु देने के बदले मे दूसरे की वस्तुएँ लेने को भी तैयार हो किन्तु वस्तु विनिमय प्रणाली मे ऐसा दोहरा संयोग प्रायः कठिन रहता है जब आवश्यकताएँ अधिक हो व निरन्तर बढ़ रही हो उदाहरण - राम के पास गेँहू है उसे चावल की आवश्यकता है इसी तरह श्याम के पास चावल है उसे चीनी की आवश्यकता है तो ऐसी स्थिति मे वस्तु विनिमय संभव नही होगा उन्हे अपने अनुकूल व्यक्ति की तलाश करनी होगी इस प्रकार दोहरे संयोग की कठिनाई वस्तु विनिमय की प्रमुख

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

कठिनाई है।

30(15) सार्वजनिक वित्त या निजी वित्त मे अंतर निम्न है -

| सार्वजनिक वित्त | निजी वित्त |
|---|---|
| (1) सार्वजनिक वित्त राष्ट्र की कुल आय व व्यय से संबंधित होता है। | (1) निजी वित्त का संबंध व्यक्ति विशेष की आय व व्यय से होता है। |
| (2) वित्त मंत्री सार्वजनिक व्यय का निर्धारण करते समय बचत पर ध्यान नही देता है वह केवल उद्देश्यो की पूर्ति चाहता है। | (2) व्यक्ति विशेष व्ययो को कुछ कम करता है ताकि भविष्य के लिए कुछ बचत हो सके। |

| | |
|---|---|
| (3) सार्वजनिक बजट सरकार द्वारा प्रतिवर्ष बनाया जाता है। | (3) निजी बजट कोई व्यक्ति प्रतिमास बनाता है। |
| (4) सार्वजनिक बजट संसद के माध्यम से राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है अतः ये गोपनीय नहीं होते हैं। | (4) व्यक्तिगत या निजी बजट गोपनीय होते हैं इनको सार्वजनिक महत्व नहीं होता है। |

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

(15) 34 + 3 = 37

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 15 के अंक | कुल अंक

30 (16) भूमि कटाव को रोकने के लिए निम्न उपाय अपनाने चाहिए।

(1) विस्तृत सर्वेक्षण – सर्वप्रथम इस बात की जाँच करनी चाहिए कि देश के कौन-कौन से क्षेत्र मिट्टी कटाव की समस्या से गंभीर रूप से ग्रस्त है जिससे इनके निदान हेतु आवश्यक उपाय किए जाएँ।

(2) वृक्षारोपण – देश मे वनो के विस्तार या वृक्षारोपण कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए पानी से होने वाले मिट्टी के कटाव को रोकने का एकमात्र यही उपाय है।

(3) चराई पर नियंत्रण – पशुओ द्वारा की जाने वाली अति-चराई पर नियंत्रण किया जाना चाहिए क्योंकि ऊंची घास, पेड़, झाड़ियाँ आदि हवा के प्रचण्ड वेग को कम कर देते हैं और मिट्टी का कटाव नही हो पाता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

30 (17) रबी की फसल – रबी की फसलों से आशय ऐसी फसलों से है जिन्हे शीत ऋतु (नवम्बर-दिसम्बर) मे बोया जाता है तथा ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभ में काट लिया जाता है उन्हे रबी की फसल कहते है।
उदाहरण – गेंहू, चना, सरसों, मटर।

खरीफ की फसल – खरीफ की फसलो से आशय ऐसी फसलो से है जिन्हे जून-जुलाई मे बोया जाता है तथा दीपावली के आसपास काट लिया जाता है उन्हे खरीफ की फसल कहते है
उदाहरण – चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा।

BSEMP

7

30 (18) कालाईल के अनुसार "जो देश लोहे पर नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं वे शीघ्र ही सोने पर भी नियंत्रण प्राप्त कर लेते है" वर्तमान युग मे लोहा, सोने से भी ज्यादा महत्व रखता है। लोहा - इस्पात उद्योग किसी भी देश के औद्योगिक एवं आर्थिक विकास के लिए अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योकि यह एक आधारभूत उद्योग है इस अर्थ है कि इस उद्योग के उत्पादन पर अन्य उद्योग आधारित होते है कृषि तथा उद्योगों की कोई भी योजना बिना लोहा एवं इस्पात उद्योगो के प्रारंभ नही हो सकती। आधुनिक युग मशिनों का युग है और मशिने बनाने के लिए लोहा इस्पात उद्योग ही कच्चा लोहा अर्थात इस्पात प्रदान करता है। खाना पकाने के बर्तनो से लेकर, छोटी मशीनो से बड़ी मशीने,

BSEMP 3

3

पृष्ठ के अंकों का योग

रेल, कृषि यंत्र, जहाज निर्माण, युद्ध सामग्री सभी के निर्माण मे लोहा तथा इस्पात [illegible] का ही प्रयोग होता है इस प्रकार सभी क्षेत्रो मे इस उद्योग का महत्व प्रतिपादित होता हैं इसलिए हमारे देश मे भी इस उद्योग की उन्नति पर पर्याप्त ध्यान दिया गया हैं।

जवाहर लाल नेहरू के अनुसार- "किसी भी देश का वैभव दो बातो से आँका जा सकता हैं एक तो वह कितना इस्पात प्रयोग करता है दूसरी वह कितनी बिजली पैदा करता है।"

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

19

| 43 | + | – | = | 43 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 19 के अंक | | कुल अंक |

30 (ए) समय के आधार पर बाजार चार प्रकार के होते हैं –

(1) अति- अल्पकालीन बाजार।
(2) अल्पकालीन बाजार।
(3) दीर्घकालीन बाजार।
(4) अतिदीर्घकालीन बाजार।

(1) अति अल्पकालीन बाजार – ये बाजार बहुत कम समय या एक दिन के बाजार होते हैं। शाक, सब्जी, दूध आदि वस्तुऐं बहुत कम समय के लिए अच्छी रहती हैं इनके बाजार प्रायः सुबह या शाम के होते हैं। बाजार मे माँग के अनुरूप पूर्ति घटायी या बढ़ायी नही जा सकती है मूल्य निर्धारण मे पूर्ति की अपेक्षा माँग की प्रधानता होती है।

(2) अल्पकालीन बाजार – अल्पकालीन बाजार की अवधि अति - अल्पकालीन बाजार से अधिक होती है इस प्रकार के बाजार मे वस्तु की पूर्ति मे वृद्धि ~~करने~~ करने के लिए थोड़ा समय मिल जाता है। इस बाजार मे भी माँग का ही प्रभाव रहता है।

(3) दीर्घकालीन बाजार- जिन बाजारों की अवधि अल्पकालीन बाजार की अपेक्षा अधिक होती है उसे दीर्घकालीन बाजार कहते है इस बाजार मे मॉंग के अनुरूप पूर्ति को कम या अधिक किया जाता सकता है। पूर्ति बढाने के लिए वह नए साधनो का प्रयोग कर सकता है तथा पूर्ति कम करने के लिए वह कुछ साधन घटा सकता है इस बाजार मे मॉंग की अपेक्षा पूर्ति का प्रभाव अधिक हो जाता है।

(4) अति-दीर्घकालीन बाजार- अति-दीर्घकाल मे मॉंग और पूर्ति मे आधारभूत परिवर्तन होते हैं मूल्य निर्धारण मे इसका कोई व्यावहारिक महत्व नही है।

BSEMP

3

पृष्ठ के अंकों का योग

30 20 कुल लाभ व शुद्ध लाभ में निम्न अंतर है।

| कुल लाभ | शुद्ध लाभ |
|---|---|
| (1) कुल बिक्री में से कुल उत्पादन व्यय घटाने के बाद जो राशि शेष बचती है उसे कुल लाभ या सकल लाभ कहते हैं। | (1) साहसी को जोखिम वहन करने एवं सौदा करने की चतुराई के लिए जो पुरस्कार मिलता है उसे शुद्ध लाभ कहते हैं। |
| (2) कुल लाभ का क्षेत्र व्यापक है। | (2) शुद्ध लाभ का क्षेत्र सीमित है। |
| (3) कुल लाभ में कई तत्व सम्मिलित होते हैं। | (3) शुद्ध लाभ कुल लाभ का ही एक अंग होता है। |
| (4) कुल लाभ में साहसी के निजी साधन का प्रतिफल, घिसावट व्यय, बीमा व्यय | (4) शुद्ध लाभ में साहसी के जोखिम तथा मोल भाव करने की चतुराई शामिल है। |

एकाधिकार, लाभ,
आकस्मिक लाभ
सम्मिलित रहता है।

B S E M P

30 (21) भारत मे पंचवर्षीय योजनाओ की सफलता के लिए अग्रलिखित सुझाव सुझाए जा सकते हैं -

(1) जनता का सहयोग - भारत की अधिकांश जनता योजनाओ से अनभिज्ञ है अतएव प्रचार प्रसार द्वारा जनता को योजना के संबध मे जानकारी दी जाए।

(2) विदेशी सहायता - उचित समय पर विदेशी सहायता प्राप्त होने के प्रयास किए जाए क्योंकि विदेशी सहायता के अभाव मे

योजनाएँ अधूरी रह जाती है।
(3) पंचवर्षीय योजनाओं के क्रियान्वयन का कार्य उचित, ईमानदार, कुशल व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को ही सौंपा जाए। इसे राजनीति से मुक्त रखा जाए।
(4) सिंचाई सुविधा का विकास – भारतीय कृषि भूमि आज भी मानसूनी वर्षा पर निर्भर है जो कि अनिश्चित एवं अनियमित है अतएव सिंचाई सुविधाएँ बढ़ाने हेतु पर्याप्त कदम उठाए जाए जिससे कृषि उत्पादन बढ़े।

30 (22) विश्व के उच्चतम पर्वत के रूप मे भारत माँ की उन्नत ललाट पर शोभित हिमालय को हिमकिरीट की उपमा प्रदान की गई है। आर्थिक महत्व को देखते हुए इसे ईश्वर की ओर से भारत को दी गयी अनमोल भेंट कह सकते हैं हिमालय का आर्थिक महत्व निम्न है –

(1) भारत का सजग प्रहरी – भारत के उत्तर मे विशाल हिमालय पर्वत की उच्च श्रेणियाँ देश की रक्षा करती है ये पर्वत-श्रृंखलाएँ प्राचीनकाल से ही

3

3

अंकों का योग

शत्रु आक्रमण से देश की रक्षा करती रही है।

(2) वन सम्पदा - हिमालय पर्वत पर अनेक प्रकार की अटूट वन सम्पदा फैली है इससे अनेक उद्योगो को कच्चे माल की प्राप्ति होती है तथा ईंधन की भी प्राप्ति होती है। वनो से देश को करोड़ो रुपए का राजस्व प्राप्त होता है।

(3) शुष्क व ठण्डी हवाओ से रक्षा - हिमालय पर्वत के कारण ही टुण्ड्रा प्रदेश से आने वाली ठण्डी व शुष्क हवाओ से भारत सुरक्षित रहा है अन्यथा भारत की जलवायु आर्थिक विकास मे बाधक होती

(4) नदियों के स्त्रोत - हिमालय पर्वत सदैव बर्फ से ढंका रहता है इनका जल पिघलकर नदियो मे आता है ये नदियाँ ~~उत्तर~~ भारत के खेतो को सींचकर धन धान्य पैदा करती है नदियो पर बाँध बनाकर

BSEMP

7
पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

C. No.-14029

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम
7. विषय 8. माध्यम
8. दिनांक

पृष्ठ 25 55

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

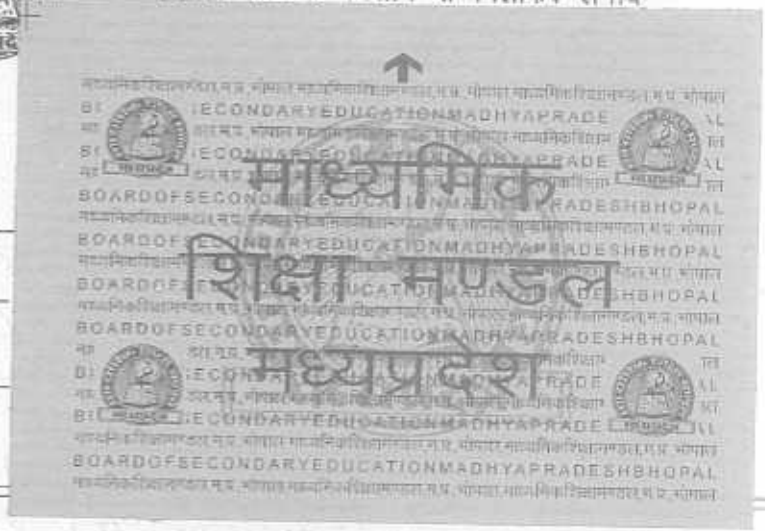

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

जल विद्युत भी उत्पन्न की जा सकती है

(5) चाय की कृषि व चारागाह- हिमालय पर्वत की घाटियों मे अनेक प्रकार के चरागाह पाए जाते हैं जिनमे भेड़- बकरियों को चराया जाता है, इसके अतिरिक्त हिमालय पर्वत पर चाय की कृषि भी की जाती है यह कृषि पहाड़ी ढलानो पर विशेष रूप से असम व पश्चिम बंगाल मे की जाती है।

BSEMP

के अंकों का योग

55 + 3 = 58

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

30 (23) उत्तर भारत मे दक्षिण भारत की अपेक्षा कुँओ से सिचाई करना अधिक सरल है क्योकि-

(1) भू-गर्भीय जल पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध होना - उत्तर भारत मे भूगर्भीय जल पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध है जबकि दक्षिण भारत मे भू-गर्भीय जल पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध नही है इसलिए उत्तर भारत मे कुँओ से सिंचाई करना अधिक सरल है।

(2) भूमि का पानी कम गहराई पर प्राप्त- चूँकि उत्तर भारत मे भू-गर्भीय जल कम गहराई पर उपलब्ध है अत: अधिक गहरा कुँआ खोदने की आवश्यकता नही होती अन्यथा व्यय अधिक होता।

(3) भूमि मे मीठा पानी उपलब्ध हो - उत्तर भारत की भूमि मे मीठा पानी उपलब्ध है खारा नही जबकि दक्षिण भारत मे महासागरो की निकटता के कारण ऐसा नही है अत: दक्षिण भारत मे कुँओ से सिचाई करना सरल है।

(4) उत्तर भारत मे सिचाई अधिक होती है अत: कुँओ का उपयोग अधिक होता है जिससे उत्तर भारत मे कुँओ की अधिकता है।

| 58 | + | 4 | = | 62 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 3 के अंक | | कुल अंक |

30(२५) नर्मदा नदी घाटी योजना मध्यप्रदेश व गुजरात की संयुक्त परियोजना है इस योजना के निम्न लिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

(1) सिचाई सुविधा का विकास – म.प्र. तथा गुर्जरात राज्य मे सिचाई सुविधाओं का विस्तार करना जिससे उपज मे वृद्धि हो। इस योजना का लक्ष्य करीब 27.6 लाख हेक्टेयर भूमि की सिचाई करना है जिनमे से 14.5 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई हो चुकी है

(२) बाढ़ो पर नियंत्रण - नर्मदा नदी घाटी योजना का एक उद्देश्य नर्मदा व उसकी सहायक नदियो की बाढ़ो पर नियंत्रण करना भी है इस हेतु अनेक नहरो का निर्माण किया किया है ताकि बाढ़ का पानी नहरो द्वारा निकाला जा सके।

B S E M P 4

4

पृष्ठ के अंकों का योग

पृष्ठ 28

| 62 | + | | = | 62 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 4 के अंक | | कुल अंक |

(3) जल विद्युत की प्राप्ति- जल विद्युत की प्राप्ति करना भी इस योजना का प्रमुख लक्ष्य है इस परियोजना की कुल विद्युत क्षमता लगभग 2700 मेगावाट

(4) भूमि अपक्षरण पर रोक- भूमि अपक्षरण को रोकना भी इसका एक उद्देश्य है इस योजना के अंतर्गत नदियो तथा पहाड़ी ढालो पर बन्ध बनाकर एवं वृक्षारोपण कार्यक्रमो के द्वारा वनो का विस्तार कर भूमि कटाव पर नियंत्रण लगाया जा रहा है।

अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील C. No.-14029

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक

6. परीक्षा का नाम

7. विषय 8. माध्यम

8. दिनांक

परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

पृष्ठ 29 62 + 4 = 66

30 (25) पूर्ण प्रतियोगिता और अपूर्ण प्रतियोगिता में निम्न अंतर है –

| पूर्ण प्रतियोगिता | अपूर्ण प्रतियोगिता |
|---|---|
| (1) इसमे क्रेताओ तथा विक्रेताओ की संख्या अधिक होती है। | (1) इसमे क्रेताओ तथा विक्रेताओ की संख्या सीमित होती है। |
| (2) क्रेताओ तथा विक्रेताओ के मध्य स्वतंत्र प्रतियोगिता होती है। | (2) क्रेताओ तथा विक्रेताओ के मध्य स्वतंत्र प्रतियोगिता नही होती है। |
| (3) इसमे वस्तु की ईकाईयाँ रूप, किस्म, रंग, गुण मे समान होती है। | (3) इसमे वस्तु की ईकाइयाँ किस्म, रूप, रंग व गुण मे समानता लिए हुए नही होती है। |

BSEMP

4

पृष्ठ के अंकों का योग

30

66 + — = 66

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

| | |
|---|---|
| (4) इसमे उत्पादन के साधन पूर्णतः गतिशील होते है उन्हे एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय मे लगाया जा सकता है। | (4) इसमें उत्पादन के साधनो मे आंशिक गतिशीलता पाई जाती है। |
| (5) पूर्ण प्रतियोगिता एक काल्पनिक स्थिति है। | (5) अपूर्ण प्रतियोगिता एक व्यावहारिक स्थिति है। |
| (6) इसमे एक समय मे वस्तु का एक ही मूल्य रहता है। | (6) इसमे एक समय मे अलग - अलग क्रेताओं से अलग अलग मूल्य लिये जाते हैं। |

योग

66 + 4 = 70
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

30 (21) कपास की खेती मुख्यतः महाराष्ट्र व गुजरात राज्य में होती है इसके उत्पादन की निम्न भौगोलिक दशाओं का वर्णन किया गया है -

(i) तापमान - जून - जुलाई में जब तापमान 20° c से 27° c तक रहता है यह तब बोया जाता है। अक्टूबर नवम्बर में खिलना शुरू होता है तब अच्छी धूप की आवश्यकता होती है, उस समय पाला या वर्षा इसके लिए हानिकारक है।

(ii) मिट्टी - कपास के उत्पादन के लिए लावायुक्त काली मिट्टी या कछारी दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है जिसमे चूना, फोस्फोरस तथा जैविक अंश पर्याप्त मात्रा मे हो अतः लावायुक्त काली मिट्टी ही इसके लिए विशेष रूप से उपयुक्त रहती है।

(iii) वर्षा - कपास के लिए 71 सेमी से 100 सेमी तक वर्षा आवश्यक है, अधिक व लगातार वर्षा इसके लिए हानिकारक है। 100 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रो मे सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएँ सुलभ होनी चाहिए।

| 70 | + | 4 | = | 74 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 4 के अंक | | कुल अंक |

30(28) भारत मे कागज उद्योग निम्न समस्याओं का सामना कर रहा है-

(1) कच्चे माल की समस्या - कागज का उत्पादन बाँस से तथा तराई क्षेत्रो के कोणधारी वृक्षो की मुलायम लकड़ी से होता है देश मे इस प्रकार के कच्चे माल का अभाव है जो इसकी प्रमुख समस्या है।

(2) उच्च उत्पादन लागत - कागज निर्माण के लिए कच्चा माल पहाड़ी क्षेत्रो से कारखानो तक पहुचाने मे व्यय अधिक होता है इससे उत्पादन लागत बढ़ जाती है और माँग कम हो जाती है।

(3) अनुसंधान का अभाव - नए प्रकार के कच्चे माल की खोज करने एवं उत्पादन लागत कम करने के लिए भारत मे अनुसंधान शालाओं का अभाव है।

B
S
E
M
P

के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक

परीक्षक के लिये

6. परीक्षा का नाम _____

7. विषय _____ 8. माध्यम _____

8. दिनांक _____

पृष्ठ 33 → 34

(4) मशीनो व उपकरणों की समस्या - देश मे बनाई जाने वाली मशिने व उपकरण जो कागज कारखानो मे प्रयुक्त होती है वे पुराने है तथा उनकी गुणवत्ता मे सुधार की आवश्यकता है। इस कारण इस उद्योग का आधुनिकीकरण करण करना आवश्यक हो गया है।

(5) अखबारी कागज की समस्या - समाचार के लिए प्रयो मे आने वाले अखबारी कागज के लिए अलग से कारखाना बनाया जाना है उसका कारखाना केवल नेपानगर मे है

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

74 + — = 74
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

30 (29) वास्तविक मजदूरी या असल मजदूरी निम्न कारकों से प्रभावित होती है

(1) मुद्रा की क्रय शक्ति - मुद्रा की क्रय शक्ति से तात्पर्य श्रमिकों की अन्य वस्तुएँ प्राप्त करने की क्षमता है यदि मुद्रा की क्रय शक्ति बढ़ गई है इसका अर्थ है कि वस्तुएँ सस्ती हो गई है अब मजदूर अधिक मात्रा मे वस्तुएँ क्रय कर सकेगा इस दशा मे हम कह सकते है कि उसकी असल मजदूरी बढ़ गई है। मुद्रा की क्रय शक्ति कम होने का अर्थ है वस्तुओं की कीमते बढ़ गई है तब उसकी वास्तविक मजदूरी कम कही जाएगी।

(2) व्यवसाय की समाज मे प्रतिष्ठा - जिन व्यवसायों की समाज मे प्रतिष्ठा होती है वहाँ वास्तविक मजदूरी अधिक होती है जैसे डॉक्टर या इंजीनियर का कार्य। इसके विपरीत जो व्यवसाय घृणा की दृष्टि से देखे जाते है उनकी वास्तविक मजदूरी कम होती है।

| 24 | + | — | = | 24 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 3 के अंक | | कुल अंक |

(3) व्यवसाय प्रारंभ करने का व्यय – कुछ व्यवसाय ऐसे होते है जहाँ कार्यरत व्यक्तियो को अपनी योग्यता तथा कुशलता बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ व्यय करना होता है जैसे – वकीलो व शिक्षको को अपने दैनिक कुशलता का स्तर बनाए रखने के लिए पुस्तको पर व्यय करना होता है इसके विपरीत कुछ व्यवसाय ऐसे होते है जहाँ कोई अतिरिक्त व्यय नही करना पड़ता जैसे बैंक क्लर्क को। यदि बैंक क्लर्क या प्राध्यापक को वही मौद्रिक मजदूरी मिलती हो तो वास्तविक मजदूरी क्लर्क की अधिक मानी जाएगी।

(4) प्रशिक्षण का समय व लागत – जिन व्यवस मे विशेष प्रशिक्षण या ट्रेनिंग की आवश्यक्ता होती है जिन पर श्रमिको को व्यय करना पड़ता है तो वहाँ वास्तविक मजदूरी अधिक होगी

(5) आश्रितो को रोजगार – जिस व्यवसाय मे श्रमिक को रोजगार के

पृष्ठ

| 74 | + | 5 | = | 79 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 4 के अंक | | कुल अंक |

अतिरिक्त उसके आश्रितो स्त्री व बच्चो के लिए भी रोजगार की सुविधा हो तो वहाँ वास्तविक मजदूरी अधिक मानी जाएगी क्योंकि कम मौद्रिक मजदूरी मिलने पर भी श्रमिक वहाँ कार्य करने को राजी हो जात

(6) व्यवसाय का स्थायित्व – वर्ष भर जो व्यवस स्थायी एवं नियमित रूप से चलते रहते हैं वहाँ मौद्रिक मजदूरी कम होते हुए भी वास्तविक मजदूरी अधिक होती है इसके विपरीत जिन व्यवसायो मे केवल विशेष मौसम मे ही कार्य मिलता है वहाँ वास्तविक मजदूरी कम होती है क्योंकि शेष बेकार दिनो मे उन्हे मजदूरी नही मिलती है।

(7) कार्य की प्रकृति – कार्य के स्वभाव की दृष्टि से रुचिकर तथा सरल, सुविधाजनक व्यवसायों मे कार्यरत मजदूरो की वास्तविक मजदूरी अरुचिपूर्ण, तथा जोखि भरे व्यवसाय मे कार्यरत मजदूरी की अपेक्षा अधिक होती है।

BSEMP

5

ये अंकों का योग

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनाक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम
7. विषय 8. माध्यम
8. दिनांक

परीक्षक के लिये

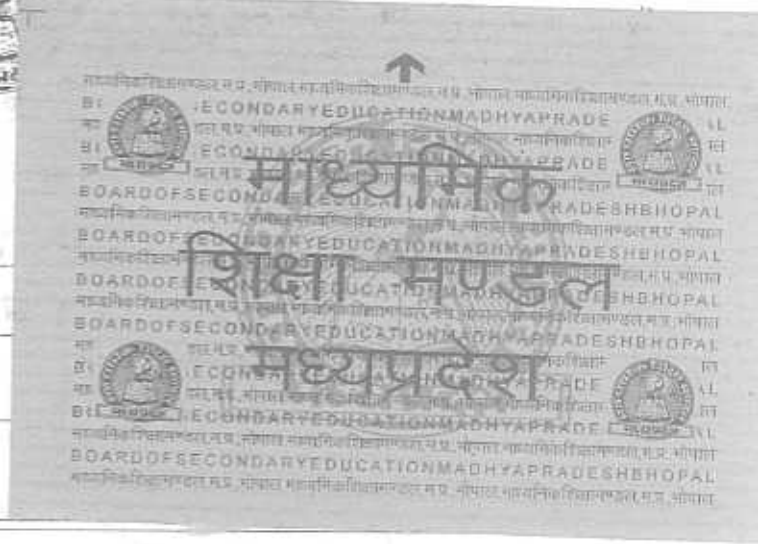


पृष्ठ 37

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

30 (30) भारतीय कृषि पूर्ण रूपेण वर्षा पर निर्भर है वर्षा की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता पर ही भारतीय कृषि की खुशहाली या बरबादी निर्भर है मानसूनी वर्षा की निम्न विशेषता भारतीय कृषि पर प्रभाव डालती है

(1) एक विशेष समयावधि मे वर्षा – भारत मे वर्षा एक विशेष समयावधि मे होती है लगभग 90% वर्षा ग्रीष्म काल के मानसून पर निर्भर है जबकि 10% शीतकाल के उत्तरपूर्वी मानसून पर निर्भर है। भारत मे तीन से चार माह मे ही वर्षा होती है।

(2) वर्षा की अनिश्चितता – भारतीय वर्षा का समय निश्चित नही है .कुछ क्षेत्रो मे वर्षा जल्दी आरंभ

38

| | | |
|---|---|---|
| 79 + — = 79 | | |
| योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक |

हो जाती है तथा कुछ क्षेत्रो मे देर से शुरु होती है किन्ही क्षेत्रो मे तो वर्षा होती ही नही है इस प्रकार भारत मे वर्षा अनिश्चित है।

(3) अनियमितता – भारत मे वर्षा की अनिश्चितता के साथ साथ अनियमितता भी पाई जाती है किसी क्षेत्र मे वर्षा अधिक होती है तो किसी क्षेत्र मे कम कुछ क्षेत्रों मे वर्षा होती ही नही है। इस अनियमितता का प्रभाव फसलो पर ही पड़ता है।

(4) कभी अतिवृष्टि कभी अनावृष्टि – कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि से लहलहाती फसलें नष्ट हो जाती है बाढ तथा अकाल की स्थिति का होना कृषि पर विनाशकारी प्रभाव डालता है इसके अतिरिक्त जन-धन की हानि भी होती है

(5) वर्षा का असमान वितरण – भारत मे वर्षा का वितरण बहुत असमान है विभिन्न राज्यो मे वर्षा का घनत्व भिन्न-भिन्न है। चेरांपूंजी मे लगभग 1087 सेमी वर्षा होती है तो राजस्थान के मरुस्थलीय भाग मे 20 सेमी से भी कम

ष्ठ 39

| 79 | + | 8 | = | 98 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 3 के अंक | | कुल अंक |

वर्षा होती है भारत के 11% भाग मे 190 cm, 21% भाग मे 125 cm से 190 cm, 37% भाग मे 76 से 125 cm, 24% भाग मे 38 से 76 cm तथा 7% भाग मे 38 cm से भी कम वर्षा होती है अतः भारत मे वर्षा के वितरण मे भारी असमानता पाई जाती है।

30 26 लोकवित्त तथा निजी वित्त मे समानताएँ निम्न है -

(1) लोकवित्त तथा निजी वित्त दोनो का ही उद्देश्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना है लोक वित्त मे सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तथा निजी वित्त मे व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

(2) दोनो ही अपना - अपना बजट तैयार करती है लोक वित्त मे सार्वजनिक बजट तथा निजी वित्त मे व्यक्तिगत बजट बनाया जाता है।

अंकों का योग

| 85 | + | 5 | = | 90 |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 4 के अंक | | कुल अंक |

(3) दोनो का ही लक्ष्य अपनी आवश्यकताओं की ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ पूर्ति कर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है।

(4) दोनो ही साधनो के कम होने की स्थिति मे ऋण का सहारा लेती है।

(5) लोक वित्त तथा निजी वित्त दोनो ही आय और व्यय मे संतुलन स्थापित करने की व्यवस्था करते है।

90/100

अंकों का योग